बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर: परिचय और प्रमुख योगदान

प्रश्न 1 (आसान). बाबा साहेब का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
उत्तर – उनका जन्म 14 अप्रैल, 1891 को महू (मध्य प्रदेश) में हुआ था।

प्रश्न 2 (आसान). संविधान निर्माण में उनका क्या मुख्य योगदान था?
उत्तर – वे भारतीय संविधान के मुख्य निर्माता थे।

प्रश्न 3 (मध्यम). बाबा साहेब ने उच्च शिक्षा कहाँ से प्राप्त की थी?
उत्तर – उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा न्यूयॉर्क (अमेरिका) और लंदन से प्राप्त की थी।

प्रश्न 4 (कठिन). बाबा साहेब ने किन-किन वर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया?
उत्तर – उन्होंने मुख्य रूप से दलितों, स्त्रियों और मजदूरों को मानवीय अधिकार और सम्मान दिलाने के लिए संघर्ष किया।

» अंबेडकर का जीवन संघर्ष और सामाजिक न्याय का संकल्प

प्रश्न 5 (आसान). बाबा साहेब अंबेडकर का जन्म किस जाति में हुआ था?
उत्तर – दलित जाति में

प्रश्न 6 (आसान). बचपन में उनसे शिक्षक ने क्या बनने के लिए पूछा था?
उत्तर – वकील

प्रश्न 7 (मध्यम). उनके बचपन के संकल्प का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – छुआछूत को खत्म करना और अछूतों के लिए नए कानून बनाना।

प्रश्न 8 (कठिन). अंबेडकर ने सामाजिक दासता को क्यों सबसे व्यापक और गहन रूप की दासता माना?
उत्तर – उन्होंने ऐसा इसलिए माना क्योंकि उनके अनुसार, अगर समाज में लोगों को उनकी जाति के कारण दबाया जाएगा और बराबरी नहीं होगी, तो बाहरी आज़ादी (जैसे अंग्रेज़ों से आज़ादी) भी कुछ लोगों का विशेषाधिकार बनकर रह जाएगी और अधूरी होगी।

» अंबेडकर के चिंतन के प्रेरक व्यक्ति और बौद्ध धर्म

प्रश्न 9 (आसान). अंबेडकर जी ने किस धर्म को अपनाया?
उत्तर – बौद्ध धर्म

प्रश्न 10 (आसान). उनके प्रेरक व्यक्तियों में से किन्हीं दो के नाम बताओ।
उत्तर – बुद्ध और कबीर

प्रश्न 11 (मध्यम). अंबेडकर जी ने बौद्ध धर्म क्यों अपनाया? इसके पीछे मुख्य कारण क्या था?
उत्तर – उन्होंने हिंदू समाज में जातिगत उत्पीड़न और भेदभाव से बहुत दुख महसूस किया, जिससे उनका मोहभंग हो गया। उन्हें बुद्ध के समतावादी (सबको समान मानने वाले) दर्शन में बहुत विश्वास था, इसलिए उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया।

प्रश्न 12 (कठिन). बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले ने अंबेडकर जी के विचारों को किस तरह प्रभावित किया होगा? संक्षेप में बताओ।
उत्तर – बुद्ध ने उन्हें समानता और अहिंसा का मार्ग दिखाया; कबीर ने जाति-भेद और कर्मकांडों के विरोध की हिम्मत दी; और ज्योतिबा फुले ने सामाजिक सुधारों, खासकर शिक्षा और दलितों-महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। इन तीनों ने मिलकर अंबेडकर जी के 'आदर्श समाज' की परिकल्पना को मजबूत किया।

» जाति-प्रथा: श्रम विभाजन और श्रमिक विभाजन

प्रश्न 13 (आसान). जाति-प्रथा के समर्थकों का जाति-प्रथा के पक्ष में क्या तर्क होता है?
उत्तर – वे इसे कार्य-कुशलता के लिए आवश्यक श्रम विभाजन मानते हैं।

प्रश्न 14 (आसान). बाबा साहेब अंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा में क्या आपत्तिजनक है?
उत्तर – यह श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन भी है।

प्रश्न 15 (मध्यम). श्रमिक विभाजन को अस्वाभाविक क्यों कहा गया है?
उत्तर – क्योंकि यह व्यक्ति की रुचि या क्षमता पर आधारित नहीं होता, बल्कि जन्म से ही पेशा निर्धारित कर देता है।

प्रश्न 16 (कठिन). जाति-प्रथा किस प्रकार किसी व्यक्ति के पेशे के चुनाव की स्वतंत्रता को बाधित करती है?
उत्तर – जाति-प्रथा व्यक्ति को उसके पैतृक पेशे से अलग कोई दूसरा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती, भले ही वह उसमें कुशल हो या परिस्थितियाँ उसे बदलने पर मजबूर करें।

» जाति-प्रथा की दोषपूर्ण पेशा निर्धारण प्रणाली

प्रश्न 17 (आसान). जाति-प्रथा में पेशा किसके आधार पर तय होता था?
उत्तर – जन्म और परिवार की जाति के आधार पर।

प्रश्न 18 (आसान). क्या व्यक्ति अपनी रुचि का काम चुन सकता था?
उत्तर – नहीं।

प्रश्न 19 (मध्यम). आधुनिक युग में यह प्रणाली क्यों और भी ज़्यादा दोषपूर्ण लगने लगी?
उत्तर – क्योंकि नए उद्योग और तकनीकें आ गईं, जिससे लोगों को पेशा बदलने की ज़रूरत पड़ी, पर जाति-प्रथा ने इसकी इजाज़त नहीं दी।

प्रश्न 20 (कठिन). अगर किसी व्यक्ति को अपने पसंद का काम करने की आज़ादी न मिले, तो समाज पर इसका क्या बुरा असर पड़ेगा?
उत्तर – समाज में बहुत सारी प्रतिभाएं दब जाएंगी, लोग अपने काम से खुश नहीं रहेंगे, जिससे समाज का विकास रुक जाएगा और उत्पादकता भी कम हो जाएगी।

» जाति-प्रथा: बेरोजगारी और आर्थिक अक्षमता का कारण

प्रश्न 21 (आसान). जाति-प्रथा किस प्रकार पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती?
उत्तर – यह व्यक्ति को जन्म के आधार पर निर्धारित पेशा अपनाने के लिए बाध्य करती है, भले ही उसकी रुचि या क्षमता कुछ और हो।

प्रश्न 22 (आसान). बेरोज़गारी और आर्थिक अक्षमता का क्या अर्थ है?
उत्तर – बेरोज़गारी का अर्थ है काम न मिलना, और आर्थिक अक्षमता का अर्थ है देश या व्यक्ति की पैसे कमाने या संपत्ति बनाने की क्षमता में कमी।

प्रश्न 23 (मध्यम). बाबा साहेब अंबेडकर के अनुसार, जाति-प्रथा बेरोजगारी का 'प्रत्यक्ष कारण' कैसे बनती है?
उत्तर – जाति-प्रथा व्यक्ति को अपना पुश्तैनी पेशा बदलने की इजाज़त नहीं देती, जिससे उसे अपनी पसंद या क्षमता के अनुसार नया काम ढूंढने का अवसर नहीं मिलता, और वह बिना काम के रह जाता है, जो बेरोजगारी का सीधा कारण है।

प्रश्न 24 (कठिन). जाति-प्रथा के कारण उत्पन्न आर्थिक अक्षमता देश के समग्र विकास को कैसे प्रभावित करती है? उदाहरण देकर समझाओ।
उत्तर – जब लोग अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार काम नहीं कर पाते, तो वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाते। इससे उत्पादन कम होता है, नवोन्मेष रुकता है, और देश की कुल आर्थिक वृद्धि प्रभावित होती है। जैसे, यदि एक प्रतिभाशाली इंजीनियर को सिर्फ इसलिए मज़दूरी करनी पड़े क्योंकि वह नीची जाति का है, तो देश को उसकी इंजीनियरिंग क्षमता का लाभ नहीं मिलेगा।

» अंबेडकर की कल्पना का आदर्श-समाज: स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता

प्रश्न 25 (आसान). अंबेडकर के आदर्श समाज में पहला मुख्य सिद्धांत क्या है?
उत्तर – स्वतंत्रता।

प्रश्न 26 (आसान). किस शब्द का अर्थ समानता है?
उत्तर – समता।

प्रश्न 27 (मध्यम). अंबेडकर ने अपने आदर्श समाज में 'भ्रातृता' को क्यों ज़रूरी माना?
उत्तर – क्योंकि भ्रातृता या भाईचारे से समाज में प्रेम, सहयोग और एकजुटता आती है, जिससे सब मिलकर एक साथ रह सकें।

प्रश्न 28 (कठिन). अंबेडकर के अनुसार, स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता एक-दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं?
उत्तर – उनके अनुसार, ये तीनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। सिर्फ स्वतंत्रता से काम नहीं चलेगा अगर समता न हो, और बिना भ्रातृता के स्वतंत्रता व समता का कोई अर्थ नहीं रहेगा। ये तीनों मिलकर ही एक आदर्श और मज़बूत समाज बनाते हैं।

» लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ और आदर्श समाज में गतिशीलता

प्रश्न 29 (आसान). लोकतंत्र का अर्थ केवल सरकार चलाने का तरीका क्यों नहीं है?
उत्तर – क्योंकि यह हमारे सामूहिक जीवन जीने की एक रीति है।

प्रश्न 30 (आसान). आदर्श समाज में किस चीज़ की आवश्यकता है जिसके बिना गतिशीलता संभव नहीं?
उत्तर – आपसी श्रद्धा और सम्मान की।

प्रश्न 31 (मध्यम). बाबासाहेब अंबेडकर ने लोकतंत्र को 'सामूहिक जीवनचर्या की रीति' क्यों कहा है?
उत्तर – क्योंकि इसमें समाज के सभी सदस्य मिलकर रहते हैं और अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं, यह सिर्फ राजनीतिक नहीं, सामाजिक प्रक्रिया भी है।

प्रश्न 32 (कठिन). लोकतंत्र में 'गतिशीलता' से क्या अभिप्राय है और यह आदर्श समाज के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – गतिशीलता का अर्थ है समाज का रुकना नहीं, बल्कि लगातार बदलना, बेहतर होना और आगे बढ़ना। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे नए विचार आते हैं, पुरानी रूढ़ियाँ टूटती हैं और समाज का विकास होता है, सबको समान अवसर मिलते हैं।

» स्वतंत्रता का व्यापक अर्थ और पेशे की स्वतंत्रता

प्रश्न 33 (आसान). अगर सरकार किसी व्यक्ति को अपनी इच्छा से यात्रा करने से रोकती है, तो यह स्वतंत्रता के किस साधारण अर्थ का उल्लंघन है?
उत्तर – गमनागमन की स्वतंत्रता का।

प्रश्न 34 (आसान). बाबा साहेब ने 'पेशे की स्वतंत्रता' को किसके बराबर माना था, यदि यह नहीं मिलती?
उत्तर – दासता (गुलामी) के बराबर।

प्रश्न 35 (मध्यम). अगर कोई व्यक्ति अपनी क्षमता का पूरा उपयोग करके कोई नया आविष्कार करना चाहता है, लेकिन उसे समाज इसकी अनुमति नहीं देता, तो यह बाबा साहेब के स्वतंत्रता के किस अर्थ का उल्लंघन है?
उत्तर – मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता का।

प्रश्न 36 (कठिन). वर्तमान भारतीय समाज में 'पेशे की स्वतंत्रता' अभी भी किन-किन रूपों में बाधित हो सकती है? कोई दो उदाहरण दो।
उत्तर – जातिगत पूर्वाग्रह के कारण (जैसे किसी ख़ास जाति के व्यक्ति को कुछ विशेष काम ही करने को कहना), या लैंगिक भेदभाव के कारण (जैसे लड़कियों को कुछ 'पुरुषों वाले' काम करने से रोकना)।

» दासता की व्यापक परिभाषा

प्रश्न 37 (आसान). क्या कानूनी पराधीनता ही दासता का एकमात्र रूप है?
उत्तर – नहीं।

प्रश्न 38 (आसान). क्या दासता में दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार का पालन करना शामिल है?
उत्तर – हाँ।

प्रश्न 39 (मध्यम). आपकी राय में, जाति-प्रथा को दासता क्यों कहा जा सकता है?
उत्तर – जाति-प्रथा में व्यक्ति को अपनी इच्छा के विरुद्ध, जाति के आधार पर कुछ विशेष कार्य करने पड़ते थे, जो दूसरों द्वारा तय किए गए थे। यह कानूनी बंधन न होने पर भी एक तरह की विवशता थी।

प्रश्न 40 (कठिन). बाबासाहेब की दासता की व्यापक परिभाषा क्यों महत्वपूर्ण है? यह हमें समाज को समझने में कैसे मदद करती है?
उत्तर – यह परिभाषा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें यह समझने में मदद करती है कि स्वतंत्रता सिर्फ़ कानूनी आज़ादी नहीं है, बल्कि व्यक्ति को अपनी इच्छा से जीने और अपने कर्तव्य चुनने की आज़ादी भी है। यह हमें समाज में छिपी हुई असमानताओं और दबावों को पहचानने में मदद करती है जो हमें लगता है कि 'सामान्य' हैं, लेकिन वास्तव में व्यक्ति की आज़ादी को छीनते हैं।

» समता का सिद्धांत: मनुष्य की असमान क्षमताओं के बावजूद

प्रश्न 41 (आसान). समता का सिद्धांत क्या कहता है कि सभी लोग _____ होते हैं?
उत्तर – समान अवसरों के हकदार

प्रश्न 42 (आसान). मनुष्य की क्षमताएँ कितने मुख्य कारकों पर निर्भर करती हैं?
उत्तर – तीन

प्रश्न 43 (मध्यम). मनुष्य की शारीरिक वंश परंपरा किस श्रेणी में आती है - जो उसके वश में है या नहीं?
उत्तर – जो उसके वश में नहीं है।

प्रश्न 44 (कठिन). अगर कोई बच्चा पढ़ने में बहुत तेज़ है और दूसरा थोड़ा कमज़ोर, तो क्या अंबेडकर के सिद्धांत के अनुसार उन्हें अलग-अलग अवसर देने चाहिए? क्यों या क्यों नहीं?
उत्तर – नहीं, अंबेडकर के सिद्धांत के अनुसार, उन्हें शिक्षा के समान अवसर देने चाहिए ताकि वे अपनी पूरी क्षमता का विकास कर सकें। पढ़ने में तेज़ या कमज़ोर होना 'अपने प्रयत्न' से जुड़ा हो सकता है, लेकिन 'सामाजिक उत्तराधिकार' (जैसे अच्छी शिक्षा की उपलब्धता) के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए।

» न्याय का तकाज़ा: समान अवसर और व्यवहार

प्रश्न 45 (आसान). न्याय के तकाज़े के अनुसार, क्या वंश परंपरा के आधार पर लोगों के साथ अलग व्यवहार करना उचित है?
उत्तर – नहीं, वंश परंपरा के आधार पर अलग व्यवहार करना अनुचित है।

प्रश्न 46 (आसान). समान अवसर क्यों ज़रूरी हैं?
उत्तर – समान अवसर इसलिए ज़रूरी हैं ताकि हर व्यक्ति अपनी क्षमताएँ विकसित कर सके।

प्रश्न 47 (मध्यम). एक बच्चे का स्कूल जाने का मौका उसकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति पर निर्भर नहीं करना चाहिए। बाबा साहेब की किस अवधारणा से यह बात मेल खाती है?
उत्तर – यह बात बाबा साहेब के 'न्याय का तकाज़ा: समान अवसर और व्यवहार' अवधारणा से मेल खाती है, जहाँ वे कहते हैं कि जन्म या सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 48 (कठिन). अगर किसी समाज को अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है, तो उसे क्या सुनिश्चित करना चाहिए और क्यों?
उत्तर – अगर समाज को अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है, तो उसे आरंभ से ही सभी सदस्यों को समान अवसर और समान व्यवहार उपलब्ध कराना चाहिए। ऐसा इसलिए, क्योंकि तभी हर व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता का विकास कर पाएगा और समाज के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे पाएगा, बिना किसी भेदभाव के।

» राजनीतिज्ञ के लिए समता का व्यवहार्य सिद्धांत

प्रश्न 49 (आसान). राजनीतिज्ञ सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार क्यों करता है?
उत्तर – क्योंकि वर्गीकरण और श्रेणीकरण करना संभव नहीं होता।

प्रश्न 50 (आसान). 'समता' किस प्रकार के जगत की वस्तु है?
उत्तर – काल्पनिक जगत की।

प्रश्न 51 (मध्यम). बाबा साहेब आंबेडकर के अनुसार, राजनीतिज्ञ के लिए व्यवहार की एकमात्र कसौटी क्या है?
उत्तर – समता का सिद्धांत, क्योंकि यह व्यावहारिक भी है।

प्रश्न 52 (कठिन). यदि मनुष्य शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से असमान हैं, फिर भी आंबेडकर 'समता' को व्यवहार्य सिद्धांत क्यों मानते हैं?
उत्तर – क्योंकि एक नेता को बड़ी जनसंख्या से व्यवहार करते समय सभी को समान अवसर देना ही सबसे सही और व्यावहारिक तरीका होता है, भेदभाव से सिर्फ़ समस्याएँ बढ़ती हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के जन्म स्थान और उनके शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश जाने वाले दो मुख्य देशों के नाम बताइए।

› पहला, उनका जन्म स्थान था महू, मध्य प्रदेश।
› दूसरा, उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए सबसे पहले न्यूयॉर्क (अमेरिका) गए।
› और तीसरा, न्यूयॉर्क से वे आगे की पढ़ाई के लिए लंदन गए।

उत्तर – जन्म स्थान: महू (मध्य प्रदेश)। उच्च शिक्षा के लिए गए देश: अमेरिका (न्यूयॉर्क) और लंदन (इंग्लैंड)।

उदाहरण 2. बाबा साहेब अंबेडकर के जीवन के मुख्य संघर्ष और उनके संकल्प को स्पष्ट कीजिए।

› पहले बताओ कि उनका जन्म किस जाति में हुआ था (दलित)।
› फिर समझाओ कि इस कारण उन्हें बचपन से क्या झेलना पड़ा (जाति-आधारित उत्पीड़न, छुआछूत, अपमान)।
› इसके बाद उनके बचपन के संकल्प को बताओ (पढ़-लिखकर वकील बनूँगा, अछूतों के लिए कानून बनाऊँगा, छुआछूत खत्म करूँगा)।
› अंत में उनके पूरे जीवन के लक्ष्य को जोड़ो (सामाजिक न्याय और समानता के लिए संघर्ष)।

उत्तर – बाबा साहेब अंबेडकर का जन्म दलित जाति में हुआ था, जिस कारण उन्हें बचपन से ही जाति-आधारित उत्पीड़न और छुआछूत का सामना करना पड़ा। इसी अनुभव ने उन्हें संकल्प दिलाया कि वे पढ़-लिखकर वकील बनेंगे, अछूतों के लिए नया कानून बनाएँगे और छुआछूत को खत्म करेंगे। उन्होंने अपना पूरा जीवन इसी सामाजिक न्याय और समानता के संकल्प को पूरा करने में लगा दिया।

उदाहरण 3. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के चिंतन के मुख्य प्रेरक व्यक्ति कौन थे?

› अंबेडकर जी ने जीवन भर समानता और न्याय के लिए संघर्ष किया।
› उनकी सोच को गहराई से प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख व्यक्ति थे।
› पहले बुद्ध, जिनके समतावादी दर्शन ने उन्हें बहुत आकर्षित किया।
› दूसरे कबीर, जिन्होंने अपने दोहों और वाणी से जाति-भेद का मुखर विरोध किया।
› और तीसरे ज्योतिबा फुले, जिन्होंने शिक्षा और सामाजिक सुधार के लिए बहुत काम किया।

उत्तर – बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के चिंतन के मुख्य प्रेरक व्यक्ति थे: बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले।

उदाहरण 4. बाबा साहेब अंबेडकर जाति-प्रथा को केवल 'श्रम विभाजन' क्यों नहीं मानते थे?

› पहला कदम: बाबा साहेब मानते थे कि सभ्य समाज में काम का बंटवारा (श्रम विभाजन) ज़रूरी है, ताकि काम अच्छे से हो।

› दूसरा कदम: लेकिन, जाति-प्रथा सिर्फ काम को नहीं बांटती, बल्कि काम करने वाले लोगों (श्रमिकों) को भी बांट देती है।

› तीसरा कदम: ये बंटवारा 'अस्वाभाविक' है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति की रुचि, क्षमता या योग्यता पर आधारित नहीं होता।

› चौथा कदम: इसके बजाय, व्यक्ति का काम उसके जन्म से ही तय हो जाता है, जिससे उसे अपना मनपसंद पेशा चुनने की आज़ादी नहीं मिलती।

› पांचवां कदम: और तो और, यह विभाजन श्रमिकों को ऊँच-नीच में भी बांट देता है, जो किसी भी सभ्य समाज के लिए ठीक नहीं।

उत्तर – इसलिए, अंबेडकर जी के अनुसार, जाति-प्रथा केवल श्रम विभाजन नहीं, बल्कि श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन और ऊँच-नीच का भी आधार है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और क्षमता का हनन करता है।

उदाहरण 5. एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जिसका पारंपरिक पारिवारिक पेशा जूते बनाना है, लेकिन उसकी सच्ची रुचि कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में है। जाति-प्रथा इस व्यक्ति को कैसे प्रभावित करेगी?

› पहला चरण: जाति-प्रथा के कारण, इस व्यक्ति का पेशा उसके जन्म और परिवार के हिसाब से 'जूते बनाना' ही तय हो जाता।

› दूसरा चरण: उसकी व्यक्तिगत रुचि, जो कि कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में है, उसे महत्व नहीं दिया जाता और उसे अपना यह पसंदीदा काम चुनने की अनुमति नहीं मिलती।

› तीसरा चरण: भले ही उसे जूते बनाने का काम पसंद न हो या वह उसमें अच्छा न हो, उसे जीवन भर उसी पेशे में बंधे रहना पड़ता, जिससे उसकी प्रतिभा बर्बाद हो जाती और वह खुश भी नहीं रह पाता।

उत्तर – जाति-प्रथा व्यक्ति को उसकी रुचि के अनुसार कंप्यूटर प्रोग्रामिंग का पेशा चुनने से रोकती और उसे उसके पारंपरिक पारिवारिक पेशे में ही बंधे रहने को मजबूर करती, जिससे उसकी क्षमता और खुशी दोनों का नुकसान होता।

उदाहरण 6. यदि एक व्यक्ति को जाति-प्रथा के कारण अपने पुश्तैनी काम से आगे बढ़ने की अनुमति नहीं मिलती, तो उस पर और समाज पर क्या आर्थिक प्रभाव पड़ेंगे? समझाइए।

› पहला कदम, व्यक्ति अपनी पसंद या क्षमता के अनुसार काम नहीं चुन पाता।

› दूसरा कदम, यदि उसका पुश्तैनी काम लाभप्रद न हो तो वह गरीबी और भुखमरी का शिकार हो सकता है।

› तीसरा कदम, वह अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर पाता, जिससे उसकी उत्पादकता कम हो जाती है।

› चौथा कदम, समाज ऐसे हुनरमंद व्यक्तियों का लाभ नहीं उठा पाता और कुल मिलाकर आर्थिक विकास धीमा हो जाता है।

› पांचवां कदम, इससे बेरोज़गारी बढ़ती है और देश की आर्थिक अक्षमता में योगदान होता है।

उत्तर – जाति-प्रथा व्यक्ति को पेशा बदलने से रोककर उसे बेरोज़गारी और गरीबी की ओर धकेलती है, जिससे व्यक्ति और समाज दोनों को आर्थिक नुकसान होता है, और देश का विकास रुक जाता है।

उदाहरण 7. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर के आदर्श समाज के तीन प्रमुख सिद्धांत क्या थे?

› पहला सिद्धांत 'स्वतंत्रता' था। इसका मतलब है हर व्यक्ति को अपनी बात कहने, सोचने, और अपना पेशा चुनने की पूरी आज़ादी हो, जब तक वह दूसरों को नुकसान न पहुँचाए।

› दूसरा सिद्धांत 'समता' था। इसका अर्थ है समाज में हर व्यक्ति को बराबर माना जाए, किसी के साथ जाति, धर्म या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव न हो, सबको बराबर अवसर मिलें।

› तीसरा सिद्धांत 'भ्रातृता' था। यह भाईचारे की बात करता है, जहाँ सब लोग एक-दूसरे से प्यार और सहयोग से रहें, जैसे एक ही परिवार के सदस्य रहते हैं।

उत्तर – बाबासाहेब के आदर्श समाज के तीन प्रमुख सिद्धांत थे: स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता।

उदाहरण 8. बाबासाहेब के अनुसार, लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ क्या है?

› बाबासाहेब मानते थे कि लोकतंत्र केवल सरकार चलाने का तरीका नहीं है।

› यह सामूहिक जीवन जीने की एक रीति है।

› इसमें समाज के सम्मिलित अनुभवों का आदान-प्रदान शामिल है।

› इसके लिए साथियों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव ज़रूरी है।

उत्तर – बाबासाहेब के अनुसार, लोकतंत्र केवल शासन प्रणाली नहीं बल्कि सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है, जिसमें आपसी श्रद्धा व सम्मान भी शामिल है।

उदाहरण 9. सोहन एक बहुत होशियार बच्चा है, और वह वैज्ञानिक बनना चाहता है। पर उसके पिता कहते हैं कि 'हम सब तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी किसान ही रहे हैं, तुम्हें भी खेती ही करनी चाहिए।' यहाँ बाबा साहेब अंबेडकर के 'स्वतंत्रता के व्यापक अर्थ' के किस पहलू का उल्लंघन हो रहा है?

› पहला चरण: प्रश्न को समझो। सोहन वैज्ञानिक बनना चाहता है, पर उसे खेती करने को कहा जा रहा है, जो उसके परिवार का पारंपरिक पेशा है।

› दूसरा चरण: बाबा साहेब के स्वतंत्रता के व्यापक अर्थ के बिंदुओं को याद करो। इसमें 'पेशा चुनने की स्वतंत्रता' एक महत्वपूर्ण बिंदु है।

› तीसरा चरण: विश्लेषण करो। सोहन को उसकी क्षमता और पसंद का काम करने से रोका जा रहा है।

› चौथा चरण: निष्कर्ष निकालो। यह सोहन की 'पेशा चुनने की स्वतंत्रता' का उल्लंघन है, जो बाबा साहेब के अनुसार स्वतंत्रता के व्यापक अर्थ का एक अहम हिस्सा है।

उत्तर – यहाँ सोहन की 'पेशा चुनने की स्वतंत्रता' का उल्लंघन हो रहा है।

उदाहरण 10. बाबासाहेब के अनुसार 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है, और यह कैसे सामान्य धारणा से अलग है?

› पहले हम सामान्य धारणा देखेंगे: ज़्यादातर लोग 'दासता' को सिर्फ़ शारीरिक या कानूनी गुलामी मानते हैं, जैसे किसी को ज़बरदस्ती काम करवाना या खरीद-फरोख्त करना।

› अब हम बाबासाहेब की परिभाषा को समझेंगे: बाबासाहेब इसे सिर्फ़ कानूनी बंधन नहीं मानते। वे कहते हैं कि दासता में वो स्थिति भी शामिल है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा तय किए गए व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है, भले ही कोई कानूनी बंधन न हो।

› दोनों में अंतर स्पष्ट करेंगे: सामान्य धारणा सिर्फ़ 'क्या किया जा रहा है' उस पर केंद्रित है, जबकि बाबासाहेब की परिभाषा 'क्यों किया जा रहा है' और 'किसकी मर्ज़ी से' इस पर भी ध्यान देती है। इसमें दूसरों की इच्छा थोपने की विवशता भी शामिल है।

उत्तर – बाबासाहेब के अनुसार दासता केवल कानूनी पराधीनता नहीं है, बल्कि वह स्थिति भी है जहाँ व्यक्तियों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश किया जाता है, भले ही कोई कानूनी बंधन न हो। यह सामान्य धारणा से व्यापक है क्योंकि इसमें सामाजिक और नैतिक दबाव भी शामिल हैं, न कि सिर्फ़ शारीरिक या कानूनी प्रतिबंध।

उदाहरण 11. प्रश्न: यदि दो व्यक्ति, 'अ' और 'ब', हैं। 'अ' एक उच्च शिक्षित परिवार से आता है और 'ब' को शिक्षा का अवसर नहीं मिला। क्या अंबेडकर के 'समता के सिद्धांत' के अनुसार उनके साथ अलग व्यवहार करना उचित है?

› पहला कदम: हमें देखना होगा कि अंबेडकर ने क्षमताओं के कौन से आधार बताए हैं। उन्होंने तीन बताए: शारीरिक वंश परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार, और अपने प्रयत्न।

› दूसरा कदम: अब इस समस्या को इन आधारों पर परखते हैं। 'अ' का उच्च शिक्षित परिवार होना 'सामाजिक उत्तराधिकार' के दायरे में आता है, जो उसके वश में नहीं था। 'ब' को शिक्षा का अवसर न मिलना भी उसके 'सामाजिक उत्तराधिकार' की कमी है, जो उसके वश में नहीं था।

› तीसरा कदम: अंबेडकर के सिद्धांत के अनुसार, जो बातें व्यक्ति के वश में नहीं होतीं (जैसे जन्म या सामाजिक पृष्ठभूमि), उन आधारों पर असमान व्यवहार नितांत अनुचित है।

› चौथा कदम: इसलिए, सिर्फ शिक्षा के अवसर न मिलने या शिक्षित परिवार से आने के आधार पर 'अ' और 'ब' के साथ अलग व्यवहार करना अनुचित है। उन्हें समान अवसर मिलने चाहिए।

उत्तर – नहीं, अंबेडकर के समता के सिद्धांत के अनुसार, 'अ' और 'ब' के साथ सिर्फ उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि या शिक्षा के

अवसर के आधार पर अलग व्यवहार करना अनुचित है। उन्हें समान अवसर और समान व्यवहार मिलना चाहिए।

उदाहरण 12. मान लीजिए एक गाँव में दो बच्चे हैं - राम और श्याम। राम एक धनी परिवार से है जिसे घर में पढ़ने के लिए किताबें, ट्यूशन और अच्छा माहौल मिलता है। श्याम एक गरीब परिवार से है जिसके पास ये सुविधाएँ नहीं हैं। बाबा साहेब अंबेडकर के 'न्याय के तकाज़े' के अनुसार, समाज को इन दोनों बच्चों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए?

› पहला चरण: हमें यह समझना होगा कि राम का धनी परिवार और श्याम का गरीब परिवार उनके 'वंश' या 'सामाजिक उत्तराधिकार' का हिस्सा है, जो उनके अपने वश में नहीं है।

› दूसरा चरण: बाबा साहेब के अनुसार, इन 'वंश' और 'सामाजिक उत्तराधिकार' के आधार पर भेदभाव करना बिलकुल अनुचित है।

› तीसरा चरण: समाज का कर्तव्य है कि वह राम और श्याम दोनों को अपनी क्षमताएँ विकसित करने के लिए 'समान अवसर और समान व्यवहार' उपलब्ध कराए।

› चौथा चरण: इसका मतलब है कि श्याम को भी शिक्षा के लिए वैसी ही सुविधाएँ और माहौल मिलना चाहिए जैसा राम को मिलता है, जैसे कि मुफ्त किताबें, अच्छी पढ़ाई, या छात्रवृत्ति, ताकि वह अपनी प्रतिभा दिखा सके और आगे बढ़ सके।

उत्तर – समाज को राम और श्याम दोनों को समान अवसर और व्यवहार प्रदान करना चाहिए, उनके वंश या सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए, ताकि श्याम भी अपनी पूरी क्षमता विकसित कर सके।

उदाहरण 13. मान लीजिए एक गाँव में 500 लोग रहते हैं। इनमें से कुछ बहुत पढ़े-लिखे हैं, कुछ किसान हैं और कुछ मज़दूरी करते हैं। गाँव का सरपंच किस सिद्धांत के आधार पर गाँव का विकास करेगा ताकि सभी को न्याय मिल सके?

› पहला कदम: सरपंच यह देखेगा कि अलग-अलग लोग क्या काम करते हैं और उनकी ज़रूरतें क्या हैं, लेकिन उनके बीच कोई 'श्रेणी' या 'वर्ग' नहीं बनाएगा।

› दूसरा कदम: वह 'समता' के सिद्धांत को अपनाएगा, यानी सभी लोगों के साथ समान व्यवहार करेगा।

› तीसरा कदम: वह सबके लिए योजनाएँ बनाएगा, जैसे कि अच्छी सड़कें, स्कूल, पानी की व्यवस्था, ताकि हर किसी को समान अवसर मिलें, चाहे उसकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो।

› चौथा कदम: वह यह नहीं सोचेगा कि कौन किस जाति का है या किसके पास कितनी ज़मीन है, बल्कि सबको गाँव का एक बराबर हिस्सा मानेगा और सभी को समान अधिकार देगा।

उत्तर – सरपंच 'समता के व्यवहार्य सिद्धांत' के आधार पर गाँव का विकास करेगा, जहाँ सभी नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के समान अवसर और सुविधाएँ मिलेंगी।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उनके जन्म, शिक्षा और संविधान निर्माण के योगदान को ज़रूर याद रखना। यह बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

• यह प्रश्न सीधे-सीधे बोर्ड परीक्षा में पूछा जा सकता है कि 'अंबेडकर के चिंतन के प्रेरक व्यक्ति कौन थे और क्यों उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया?' तो इन तीनों नामों और बौद्ध धर्म अपनाने के कारण को अच्छे से याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3-5 अंकों के प्रश्न में आता है। 'श्रम विभाजन' और 'श्रमिक विभाजन' के अंतर को स्पष्ट करना बहुत ज़रूरी है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर पूछा जाता है कि जाति-प्रथा ने किस प्रकार लोगों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और विकास को बाधित किया। इसके दोषपूर्ण पेशा निर्धारण वाले पहलू को विस्तार से समझाइए।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधा प्रश्न आता है कि अंबेडकर के आदर्श समाज की कल्पना क्या थी और उसके मुख्य सिद्धांत क्या थे। इन तीनों सिद्धांतों को उनके अर्थ के साथ याद रखना बहुत ज़रूरी है।

• यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि बाबासाहेब के अनुसार लोकतंत्र का व्यापक अर्थ क्या है। इसे केवल राजनीतिक व्यवस्था तक सीमित न मानें, बल्कि सामाजिक और व्यक्तिगत पहलुओं को भी लिखें।

• यह प्रश्न अक्सर परीक्षा में 3-4 अंक के लिए पूछा जाता है, जहाँ आपको सामान्य परिभाषा से अलग बाबासाहेब की व्यापक परिभाषा को समझाना होता है। उदाहरण ज़रूर देना!

• यह अवधारणा बाबा साहेब के सामाजिक न्याय संबंधी विचारों का एक महत्वपूर्ण आधार है। इसे अच्छे से समझें, क्योंकि इस पर निबंधात्मक प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं, जो 'समानता' और 'भेदभाव' जैसे विषयों को जोड़ते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर बाबा साहेब अंबेडकर के विचारों पर आधारित बड़े प्रश्नों में आता है, इसलिए इसे 'नैतिक सिद्धांत' और 'व्यावहारिक आवश्यकता' दोनों पहलुओं से समझकर लिखना।

एक नज़र में रिवीज़न

› अंबेडकर: जन्म 1891 महू, संविधान निर्माता, दलित-स्त्री अधिकारों के पुरोधा।
› बुद्ध, कबीर, ज्योतिबा फुले प्रेरक; जाति-भेद से निराश होकर बौद्ध धर्म अपनाया (1956)।
› जाति-प्रथा: श्रम + श्रमिक विभाजन (अस्वाभाविक, जन्म आधारित)
› जाति-प्रथा जन्म से पेशा तय करती, रुचि/क्षमता की अनदेखी करती थी।
› अंबेडकर का आदर्श समाज: स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित।
› लोकतंत्र = सामूहिक जीवनचर्या + अनुभवों का आदान-प्रदान + गतिशीलता।
› दासता = कानूनी पराधीनता + दूसरों के निर्धारित व्यवहार की विवशता।
› जन्म या विरासत पर भेदभाव नहीं; सबको समान अवसर व व्यवहार मिलना चाहिए।
› समता: राजनीतिज्ञ के लिए व्यावहारिक सिद्धांत, क्योंकि वर्गीकरण असंभव।